वेदी प्रतिष्ठा

अभिषेक जैन*

Research Assistant, ISJS, New Delhi

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव जैन समाज का सर्वाधिक मनाया जाने वाला महोत्सव है। इस अवसर पर पाषाण की प्रतिमा को पूज्य बनाया जाता है, इसे वेदी प्रतिष्ठा भी कहा जाता है। प्रतिष्ठा शब्द की व्याख्या करते हुए कहा है कि **प्रतिष्ठा स्थापना न्यासो जिनादेः प्रतिमादिषु**-धवला। सुवर्ण चांदी धातु रत्न आदि की प्रतिमा में जिन आदि की स्थापना (न्यास) करना प्रतिष्ठा कहलाता है। ये प्रतिमायें अर्हंत, सिद्ध, आचार्य, श्रुतदेवता, श्रुतस्कन्ध आदि किसी की भी हो सकती है ये प्रतिमायें गुणों का आरोपण करना प्रतिष्ठा कहलाता है।

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा में अनेकानेक कार्यक्रमों को किया जाता है, जिनमें वेदी प्रतिष्ठा मुख्य है। वेदी प्रतिष्ठा की विधि इसप्रकार है-

मण्डप के मध्य भाग में चौकोर वेदी होनी चाहिए। उसे चंदोवा, चंवर आदि से सुसज्जित करें वेदी के चारों कोनों में मिट्टी के तीन-तीन कलश क्रमशः एक के ऊपर एक रखें अर्थात् नीचे का पहला कलश सबसे बड़ा, दूसरा कलश उससे छोटा और तीसरा उससे भी छोटा होना चाहिए। यह सारी रचना दर्शनविशुद्धि आदि भावनाओं को वृद्धिंगत करने के लिए सौधर्म इन्द्र ने जिनेन्द्र देव की पूजा करने हेतु जिस वेदी की रचना की थी, ऐसा सेकल्प करें उसे वेदी पर और चन्द्रोपकादि उपकरणों पर चन्दन से युक्त पुष्पाक्षत क्षेपण किये जाते है।

इसी विषय में अधिक जानकारी के लिए आचार्य ब्रह्मदेव का प्रतिष्ठातिलक, आचार्य इन्द्रनन्दि का प्रतिष्ठा पाठ और पं. आशाधर का प्रतिष्ठासार संग्रह को पढ़ सकते हैं।

***Correspondence:** abishekjain@hotmail.com

गर्भकल्याणक

यह पंचकल्याणक प्रतिष्ठा का प्रथम दिव
इन्द्र जिस स्थान पर बालक जन्म लेने वाला है व
की माता के सोलह स्वप्न का प्रमुख दृश्य होता
के शुभ चिन्हों को देखती है जिसे देखकर माता
जीवनकाल में ऐसे अद्‌भुत दृश्य अभी तक नहीं
हैं। सायंकालीन सभा में पिता इन सपनों के अर्थ
हमारे घर में पुण्यशाली जीव का जन्म होने वाला
द्वारा नृत्य-गान करते हैं। प्रतिष्ठाचार्य के सान्निध्य

जन्मकल्याणक

यह अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ मनाया जाने वाला दिवस है। तीर्थंकर बालक के जन्म के समय स्वर्ग में तीर्थंकर का सिंहासन कम्पायमान होता है। तभी इन्द्र अपने अवधिज्ञान से जानता है कि भरत क्षेत्र के अमुक स्थान पर तीर्थंकर बालक का जन्म हुआ है। पश्चात् शची इन्द्राणी उस बालक को छल से माँ की गोद में नकली बालक देकर असली बालक को अपने साथ ले जाती है। इन्द्र उस बालक को शची इन्द्राणी से एक बार देखने का आग्रह करता है। अपने इन्द्र अपने बल से उस बालक

को एक हजार आठ नेत्र बनाकर देखता है फिर एक लाख योजन ऊँची पाण्डुक शिला पर ऐरावत हाथी पर बिठाकर ले जाकर जन्माभिषेक करता है, फिर विशाल आयोजन के साथ जन्माभिषेक की पूजा करता है। तीर्थंकर बालक के जन्म के अवसर पर इन्द्र ताण्डव नृत्य से अपने हर्षोल्लास

***Correspondence:** abishekjain@hotmail.com

को प्रकट करता है। प्रतिष्ठाचार्य के सान्निध्य में सभी लोग जन्म-कल्याणक की पूजा करते है

तपकल्याणक (दीक्षा)

यह दीवस वैराग्य से ओतप्रोत कर देता है। इस दिन महाराज ऋषभदेव का दरबार लगता हुआ है, इन्द्रों ने महाराज के मनोरंजन के लिए स्वर्ग से कमनीय रूप को धारण करने वाली देवी नीलांजना नृत्य के लिए लाते हैं नृत्य के दौरान उस देवी की मृत्यु हो जाती है तभी इन्द्र अपनी विद्या से उस देवी के स्थान पर उसी के समान दिखने वाली देवी को प्रकट कर देता है। इसी को देख तीर्थंकर को वैराग्य का कारण बनता है। पश्चात् राजा ऋषभदेव मुनि ऋषभदेव बन जाते हैं, उनके साथ ही चार हजार राजा भी दीक्षा लेते हैं। मुनि ऋषभदेव ध्यानारूढ़ हो जाते है। प्रतिष्ठाचार्य के सान्निध्य में सभी लोग तप-कल्याणक की पूजा करते है

ज्ञानकल्याणक

शुक्लध्यान में लीन मुनि ऋषभदेव को केवलज्ञान हो जाता है। जिसकारण उनके ज्ञान में त्रिकालवर्ती समस्त पदार्थ एक साथ एक समय में दर्पण के समान झलकते हैं। केवलज्ञान होने के पश्चात् सौधर्मेन्द्र की आज्ञा से कुबेर इन्द्र समवशरण की रचना करता है जो कि विशाल धर्मसभा के रूप में होती है तीन गतियों के जीवों के पुण्योदय से दिव्यदेशना सुनकर सम्यगदर्शन को प्राप्त होते हैं। प्रतिष्ठाचार्य के सान्निध्य में सभी लोग केवलज्ञान-कल्याणक की पूजा करते है

मोक्षकल्याणक निर्वाण

***Correspondence:** abishekjain@hotmail.com

यह पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का अंतिम दिन होता है, जिसमें तीर्थंकर को केवलज्ञान के पश्चात् शुद्धात्मा अग्नि की शिखा के समान सीधी सिद्धशिला पर विराजमान हो जाती है। तीर्थंकर का परमौदारिक शरीर अग्नि-इन्द्र की साक्षी में पंच तत्त्वों में विलीन हो जाता है। अंत में प्रतिष्ठाचार्य के सान्निध्य में सभी लोग मोक्षकल्याणक की पूजा करते हैं।

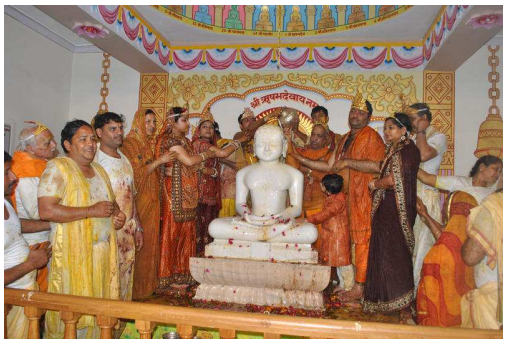

पंचकल्याणक के पश्चात् अगले ही दिन जिन मूर्तियों की प्रतिष्ठा पंचकल्याणक के दौरान हुई थी उन मूर्तियों को गाजे-बाजे के साथ अत्यंत धूमधाम से विशाल रथयात्रा के साथ ले जाते हैं। मंदिर की वेदी में श्रेष्ठियों के द्वारा स्थापित किया जाता है। उसी दिन से वह जिनेन्द्र भगवान की प्रतिमा पूजनीय हो जाती है।

***Correspondence:** abishekjain@hotmail.com